3 विषयों का पाठ्यक्रम →

विषयों के पाठ्यक्रम के मध्य में अनुशासनिक दृढ़ता पायी जाती है। प्रत्येक विषय का पाठ्यक्रम प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति करता है। इस आधार पर ही पाठ्यक्रम में परिवर्तन किये जाते है जैसे- वर्तमान समय में कम्प्यूटर समाज की प्रमुख आवश्यकता है। इसलिए प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर को स्थान प्रदान किया जाता है। इसके साथ आदर्शवादी व्यवस्था में लौकिकता एवं मानवता को स्थान दिया जाता है।

4 पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ →

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के मध्य भी अनुशासनिक दृढ़ता पायी जाती है। इसमें सामाजिक अपेक्षाओं को ध्यान में रखा जाता है। जैसे- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में खेलकूद, निबन्ध, कला, संगीत, सेवा एवं सहकारिता सम्बन्धी गतिविधियों के माध्यम से छात्रों में प्रेम एवं सहयोग की भावना का विकास होता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं द्वारा सामाजिक संरचना सामंजस्य पूर्ण रूप में सम्पन्न होती है।

(5) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया →

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम की भूमिका प्रमुख रूप से होती है। इसमें शिक्षक व्यवहार छात्रों के प्रति स्नेह पूर्वक होता है। तथा छात्र द्वारा शिक्षक को आदर्श रूप में स्वीकार किया जाता है जिसके परिणाम स्वरूप

(6) विद्यालय प्रबन्धन →

विद्यालय प्रबन्धन में भी सामाजिक सहभागिता की प्रमुख भूमिका होती है। वर्तमान समय में विद्यालय प्रबन्ध समिति के लिए अभिभावकों में से एक अध्यक्ष चुना जाता है। ग्राम पंचायत सदस्य, लेखपाल तथा स्वास्थ्य कार्यकर्त्री एवं अन्य महिला अभिभावकों को सम्मिलित किया जाता है। इसमें एक अनुशासन रखा गया है। महिलाओं की सहभागिता, जनप्रतिनिधि की सहभागिता तथा अभिभावक सहभागिता आदि को ध्यान रखा गया है। इस प्रकार की स्थिति में सामाजिक संरचना का विकास सामंजस्य पूर्ण स्थिति में होता है।

विद्यालय की नीतियाँ →

विद्यालय में संचालन सम्बन्धी नितियों के मध्य अनुशासनात्मक स्थिति पायी जाती है। विद्यालय की नीतियों का निर्धारण समाज के प्रमुख जन प्रतिनिधियों सरकारी कर्मचारियों, अभिवावकों एवं चिकित्सा क्षेत्र से सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप विद्यालय में भी छात्रों के लिए उन शैक्षिक नीतियों का निर्माण किया जाता है जो सामाजिक संरचना में सामंजस्य पूर्णता के विकास में योगदान देती है।

शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्ध →

शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्धो के मध्य भी अनुशासनिक दृढ़ता पायी जाती है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत शिक्षक के शिक्षार्थी के प्रति दायित्व तथा शिक्षार्थी के शिक्षक के प्रति दायित्वो में क्रमबद्धता पायी जाती है। जैसे - बाल केन्द्रित शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी के अनुरूप अधिगम गतिविधियो का निर्धारण किया जाता है।

स्वानुशासन की भावना →

छात्र जब विद्यालयी व्यवस्था, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं विषय गत क्षेत्रों मे अनुशासन देखता है तो वह स्वानुशासित हो जाता है। जब विद्यालय मे शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शैक्षिक व्यवस्था अनुशासित है तो इसका प्रभाव समाज की संरचना पर भी पड़ता है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति एवं व्यवस्था सामंजस्यपूर्ण एवं अनुशासित रूप मे होती है। इस प्रकार की स्थिति के लिए अनुशासनिक ज्ञान की दृढ़ता को उत्तरदायी माना जाता है।

शिक्षक अभिभावक संघ →

शिक्षक अभिभावक संघ एवं सामाजिक संरचना दोनों ही तथ्य एक दूसरे को प्रभावित करते है। शिक्षक अभिभावक संघ के अन्तर्गत महिलाओं को भी स्थान दिया जाता है। पुरुष वर्ग को भी विद्यालयी कार्यक्रम मे आमंत्रित किया जाता है। विद्यालयी व्यवस्था मे उनसे शैक्षिक कार्यों एवं अधिगम गतिविधियों में सहयोग की अपेक्षा की जाती है। इन सभी क्रियाओं के मध्य अनुशासनिक ज्ञान का प्रयोग किया जाता है।